International Journal of Education and Science Research Review
Volume-1, Issue-4 August- 2014 E-ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

भू उपयोग प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता पर इसके प्रभाव का संक्षिप्त विवरण (जनपद बदायूँ के विशेष संदर्भ में)

धर्मवीर सिंह
शोधकर्ता
सन राइज विश्वविद्यालय
अलवर

डा0वी0के0तोमर
रीडर एवं विभागाध्यक्ष
के0ए0स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कासगंज

प्रस्तावना–

प्राकृतिक कृषि संसाधनों से समृद्ध, अनुकूल जलवायु एवं उपजाऊ भू सम्पदा से युक्त भारत देश के उत्तर पूर्व में स्थित उत्तर प्रदेश राज्य में भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 16.17 प्रतिशत निवास करती है। जनसंख्या की दृष्टि से इसका भारत में प्रथम स्थान है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से पॉचवा स्थान है। राष्ट्र के आर्थिक विकास में कृषि का एक महत्वपूर्ण स्थान रहता है। कृषि द्वारा ही उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त होता है। आज राष्ट्र की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि द्वारा ही जीवन यापन करती है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में तो 90 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न देखी जा सकती है। कृषि मानव को भोजन ही प्रदान नहीं करती है अपितु राष्ट्रीय आय का प्रमुख श्रोत भी है। आज राष्ट्र की जनसंख्या जिस तीव्र गति से बढ रही है उसे दृष्टिगत रखते हुए कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को बढाना होगा। बहुत सारी बेकार पड़ी भूमि को कृषि के अन्तर्गत लाना होगा। कृषि में उन्नत बीजों एवं उर्वरकों का प्रयोग करके प्रति हैक्टेयर उत्पादन में वृद्धि करना आवश्यक है अन्यथा भविष्य में भारत जैसे कृषि प्रधान राष्ट्र को इस तीव्रगति से बढ़ती जनसंख्या के लिए भोजन की गम्भीर समस्या से जूझना पड़ेगा।

आज जिस गति से राष्ट्र की जनसंख्या बढ रही है। उस अनुपात में कृषि उत्पादनों में वृद्धि नहीं हो पा रही। अतः शोध का विषय भी इस समस्या के समाधान की ओर एक प्रयास है। जनपद बदायूँ उत्तर प्रदेश के पिछड़े जिलों की श्रेणी में आता है इसके अन्तर्गत बहुत सारा क्षेत्र आज भी कृषि के लिए अनुपयुक्त है। यहॉ परती, बंजर, ऊसर, चरागाह तथा जल प्लवन आदि रूपों में काफी भूमि बेकार पड़ी है। यदि इसे कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित कर लिया जाता है तो कृषि क्षेत्रफल में तो वृद्धि होगी ही, साथ ही कृषि उत्पादनों में भी वृद्धि होगी जिससे निर्धन लोगों को जीविका के साधन प्राप्त होंगे साथ ही जनपद की अर्थव्यवस्था भी सुदृढ होगी।

जनपद इतिहास–

बदायूं भारत के उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख शहर एवं लोकसभा क्षेत्र है। बदायूँ, उत्तर प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण जिला है। यह गंगा की सहायक नदी स्रोत के समीप स्थित है। 11वीं शती के एक अभिलेख में, जो बदायूँ से प्राप्त हुआ है, इस नगर का तत्कालीन नाम वोदामयूता कहा गया है। इस लेख से ज्ञात होता है कि उस समय बदायूँ में पांचाल देश की राजधानी थी। यह जान पड़ता है कि अहिच्छत्रा नगरी, जो अति प्राचीन काल से उत्तर पांचाल की राजधानी चली आई थी, इस समय तक अपना पूर्व गौरव गँवा बैठी थी। एक किंवदन्ती में यह भी कहा गया है कि, इस नगर को अहीर सरदार राजा बुद्ध ने 10वीं शती में बसाया था। 13 वीं शताब्दी में यह दिल्ली के मुस्लिम राज्य की एक महत्त्वपूर्ण सीमावर्ती चौकी था और 1657 में बरेली द्वारा इसका स्थान लिए जाने तक प्रांतीय सूबेदार यहीं रहता था। 1838 में यह जिला मुख्यालय बना। कुछ लोगों का यह मत है कि बदायूँ की नींव अजयपाल ने 1175 ई. में डाली थी। राजा लखनपाल को भी नगर के बसाने का श्रेय दिया जाता है।

गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए राजा भगीरथ ने कहां तपस्या की थी। यहां गंगा के कछला घाट से कुछ ही दूर पर बूढ़ी गंगा के किनारे एक प्राचीन टीले पर अनूठी गुफा है। कपिल मुनि आश्रम के बगल स्थित इस गुफा को भगीरथ गुफा के नाम से जानते हैं। पहले यहां राजा सगर के 60 हजार पुत्रों की भी मूर्तियां थी, जो कुछ साल पहले चोरी चली गईं। करीब ही राजा भगीरथ का एक अति जीर्ण–शीर्ण मंदिर है, जहां अब सिर्फ चरण पादुका बची हैं। अध्यात्मिक दृष्टि से सूकरखेत (बाराह क्षेत्र) का वैसे भी बहुत महत्व है। बदायूं के कछला गंगा घाट से करीब पांच कोस की दूरी पर कासगंज की ओर बढ़कर एक बोर्ड दिखाई पड़ता है, जिस पर लिखा है भगीरथ गुफा। एक गांव है होडलपुर। थोड़ी दूर जंगल के बीच एक प्राचीन टीला दिखाई पड़ता है। बरगद का विशालकाय वृक्ष और अन्य पेड़ों के झुरमुटों बीच मठिया है। इसी टीले पर स्थित है कपिल मुनि आश्रम और भगीरथ गुफा। लाखोरी ईंटें से बनी एक मठिया के द्वार पर हनुमानजी की विशालकाय मूर्ति लगी है। भीतर प्रवेश करने पर एक मूर्ति और दिखाई पड़ती है, इसे स्थानीय लोग

कपिल मुनि की मूर्ति बताते हैं। मूर्ति के बगल से ही सुरंगनुमा रास्ता अंदर को जाता है, जिसमें से एक व्यक्ति ही एक बार में प्रवेश कर सकता है। पांच मीटर भीतर तक ही सुरंग की दीवारों पर लाखोरी ईटें दिखाई पड़ती हैं। इसके बाद शुरू हो जाती है कच्ची अंधेरी गुफा। सुरंगनुमा रास्ते से भीतर जाने के बाद एक बड़ी कोठरी मिलती है, जहां एक शिवलिंग भी कोने में है। कोठरी के बाद फिर सुरंग और फिर कोठरी। पहले गंगा इसी टीले के बगल से होकर बहती थीं। अभी भी गंगा की एक धारा समीप से होकर बहती है, जिसे बूढ़ी गंगा कहते हैं। टीले के नीचे स्थित मंदिर से दुर्लभ मुखार बिंदु शिवलिंग भी चोरी चला गया था। बाद में पुलिस ने पाली (अलीगढ़) के एक तालाब से शिवलिंग तो बरामद कर लिया, लेकिन सगर पुत्रों की मूर्तियों का अभी भी कोई पता नहीं है। इसी टीले पर तीन समाधि भी हैं, इनमें से एक को गोस्वामी तुलसीदास के गुरु नरहरिदास की समाधि कहते हैं।

अध्ययन क्षेत्र–

भू उपयोग प्रतिरूप एवं कृषि उत्पादकता पर इसका प्रभाव शोध विषय के लिए जनपद बदायूँ को चुना गया है। इस जनपद का भौगोलिक विस्तार 27^0-40' उत्तरी अक्षांश से 28^0-29' उत्तरी अक्षांश तक तथा 79^0-16' पूर्वी देशान्तर से 79^0-31' पूर्वी देशान्तर तक है। इसकी उत्तरी सीमा पर जनपद मुरादाबाद, रामपुर व बरेली जनपद है। पूर्वी सीमा पर शॉहजहांपुर जनपद है। जनपद की दक्षिणी सीमा पर फर्रूखाबाद व कासगंज जनपद तथा पश्चिम में अलीगढ एवं बुलन्दशहर जनपद है। इस जनपद में दातागंज, गुन्नौर, सहसवान, विसौली, बदायूँ व विल्सी तहसीलें सम्मिलित हैं। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 5168.0 वर्ग किमी0 है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रदेश में 25 वां स्थान हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 30.69 लाख थी जनसंख्या का घनत्व लगभग 594 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 था। वर्ष 2001 में जनपद में साक्षरता दर लगभग 48.43 थी जिसमें पुरूष 57.37 प्रतिशत तथा स्त्रियॉ 39.46 प्रतिशत थी। यह जनपद मानसूनी जलवायु के क्षेत्र में स्थित है। यहॉ वर्षा जून से सितम्बर मास के मध्य होती है। उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित जनपद बदायूँ खनिज संसाधनों की दृष्टि से निर्धन है। इसका अधिकांश भाग मैदानी हैं। गंगा नदी सिंचाई के लिए जल प्रदान करती है। यह जनपद उत्तर प्रदेश के पिछडे जनपदों में से एक है। कुल कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा भाग प्रतिवर्ष बाढ़ से प्रभावित हो जाता है। जनपद के कुछ भागों में जल भराव की गम्भीर समस्या है।

जनपद में सिंचाई की सुविधायें सामान्य स्तर की है लेकिन प्रतिवर्ष औसतन 821.4 मिली मी0 वर्षा होने के कारण जनपद में ऐसी फसलों की बहुतायत है जिनमें अधिक मात्रा में सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। जैसे गन्ना, मैंथा आदि। जनपद में तिलहन फसलों का अच्छा उत्पादन होता है। जनपद में प्रतिवर्ष औसतन 20691 हैक्टेयर पर गन्ना, 18255 हैक्टेयर पर तिलहनी फसलें, 12378 हैक्टेयर पर प्याज तथा आलू बोया जाता है। कृषि तरीकों से बदलाव तथा कृषि उत्पादों को न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारन्टी दिये जाने से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। परिवहन के साधनों में विशेष रूप से सड़क परिवहन के विकास एवं फैलाव से तैयार उत्पादों एवं कच्चे माल एवं श्रम की गतिशीलता में व्यापक रूप से आय का स्तर बढा है। शहरीकरण का विकास हो रहा है। जनपद में चीनी, गुड व खंडसारी उद्योग, मेंथा उद्योग आलू के चिप्स व पापड उद्योग के विकास की प्रबल सम्भावनायें है। इससे जनपद के घरेलू उत्पादों एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होगी। इन्हीं समस्त सम्भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए मैंने बदायूँ जनपद को अपना शोध क्षेत्र चुना है।

पोषण तत्त्वों की कमी से जनित रोग (सामाजिक तत्त्व)–

भारत में प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक सांस्कृतिक एवं एतिहासिक दृष्टि से एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्नता मिलती है। इसलिए यहाँ पर जगह–जगह से क्षेत्र (गाँव) चुनकर उनका योजनाबद्ध तरीके से सर्वेक्षण करना ही ठीक है तथा क्षेत्रीय स्तर पर ही सर्वे करना उचित है। क्षेत्र चुनने के बाद उसका विस्तृत अध्ययन जैसे– धरातल, बनावट, ढ़ाल, जल प्रवाह प्रणाली, जलवायु एवं मिट्टी का अध्ययन समक्षमता से परन्तु एक समान इकाई वाले क्षेत्रों को एक साथ रखकर करना चाहिए। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र से समान गुण वाले गाँवों का चयन करना ही उचित होगा। गाँवों के उद्देश्य हीन एवं अक्रमबद्ध चयन से अच्छे परिणाम सामने नहीं आयेंगे। इसलिए गाँवों का चयन उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए। क्योंकि मानव ही भू–उपयोग को प्रभावित करता है वहीं भू–प्रबन्ध एवं खाद्यान्न संकलन करता है एवं इन कार्यों में पूंजी लगाता है।

जनपद में गाँवों का चयन करने के पश्चात प्रत्येक फसल में, प्रत्येक गाँव का गहराई से अध्ययन करना होगा एवं यह देखना होगा कि उन गाँवों में भूमि का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है। वहाँ कैसे खाद्यान्न पैदा किये जा रहे हैं एवं वे पोषण तत्त्वों की दृष्टि से कितने सम्पन्न हैं तथा किस तत्त्व की कमी से बीमारी के शिकार हो रहे हैं। उनके

खाद्यान्न में कितने पोषण की क्षमता है। कम से कम वर्ष में दो बार अवश्य भ्रमण करना होगा। पहला खरीफ की फसल में एवं दूसरा रबी की फसल में। गाँव के खेतों का मानचित्र लेखपाल से लिया जा सकता है एवं उनका क्षेत्रफल तहसील स्तर के कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक खेत के मानचित्र पर वहाँ जाकर खेत में बोई गई फसल (भू–उपयोग) को अंकित किया जायेगा। खेत पर जाकर वहाँ मौजूद किसानों से फसलों एवं खाद्यानों के बारे में विभिन्न प्रश्न पूछकर, आंकड़े एकत्र किये जायेंगे। फसल सम्बन्धी जानकारी के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की होने वाली बीमारियों के बारे में भी जाना जा सकता है। किसानों से प्रति एकड़ विभिन्न फसलों के उत्पादन के बारे में भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं। उनसे फसलों की किस्म, फसल चक्र तथा कृषि मे प्रयोग किये जाने वाले यंत्रों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकेगी। इसके अतिरिक्त कृषि करने की विधि, सिंचाई के साधन एवं सामान्य रूप से जीवन स्तर का भी पता चलेगा। बिल्कुल इसी प्रकार का एवं इन्हीं तथ्यों पर आधारित सर्वेक्षण रबी की फसल में किया जायेगा। भू–उपयोग की विस्तृत योजना बनाते हुए, फसलों का विवरण एवं भूमि का उपयोग तथा अनुपयोग का मानचित्र तैयार किया जायेगा तथा आँकड़ों का चयन करके उनका मानचित्र द्वारा प्रदर्शन किया जायेगा।

संरचना, धरातल, जलवायु, मिट्टी और सामान्य भू–उपयोग के आधार पर अध्ययन क्षेत्र को समान गुण एवं तत्त्वों के आधार पर विभाजित किया जायेगा। परन्तु समान गुण वाले क्षेत्रों में से कम से कम एक गाँव का अध्ययन अवश्य किया जायेगा और चुने हुए गाँव में पोषण तत्त्वों की विशेष रूप से जानकारी प्राप्त की जायेगी। इन चुने हुए गाँवों के अध्ययन में भौतिक तत्त्वों के अतिरिक्त वहाँ पर सिंचाई की सुविधा, आवागमन के साधन, बाजार की सुविधा, लगाई गई पूंजी एवं कृषि प्रबन्ध पर भी गहराई से अध्ययन किया जायेगा।

पोषण एवं स्वास्थ्य–

उत्तम पोषण उत्तम स्वास्थ्य का जनक है। पोषक तत्त्व ही शरीर की सामान्य वृद्धि एवं विकास के आधार हैं। पोषक तत्त्वों के आधार पर यह ही उत्तम, स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य विचार शील जीवन जिया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के विटामिन्स की खोज के बाद विज्ञान ने पुनः विज्ञान ने पोषण विज्ञान का आविष्कार किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद प्रोटीन पर खोज करने पर उपरोक्त तथ्य संज्ञान में आया। वैज्ञानिकों ने गत वर्षों में पोषक तत्त्वों एवं स्वास्थ्य को बहुत करीब से परखने की कोशिश की एवं इस ओर विशेष ध्यान दिया। यह उगती हुई स्वीकारोक्ति है कि जीवन के प्रथम चरण में उत्तम पोषण उत्तम स्वास्थ्य एवं उत्तम जीवन का आधार है। परन्तु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक एवं आर्थिक विकास में पोषण एवं कुपोषण का महत्त्व बाधक है।

यह वास्तविकता है कि पोषक तत्त्व भूमि की उर्वरा शक्ति एवं उत्पादन क्षमता से सम्बन्धित होते हैं। अधिक उत्पादक भूमि में पोषक तत्त्वों का स्तर ऊँचा एवं कम उत्पादक भूमि में पोषक तत्त्वों का स्तर नीचा होता है। परन्तु कहीं–कहीं अपवाद भी मिलता है तथा कम उत्पादक भूमि में भी पोषक तत्त्वों का स्तर ऊँचा पाया गया है। शायद ऐसा इस क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से भी सम्भव हो सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। ऐसे लोग जिनके पास कृषि के लिए भूमि नहीं है वे कृषक मजदूर के रूप में जीवन यापन करते हैं। किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में कृषि का बहुत बड़ा योगदान रहता है।

जनपद बदायूँ कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित जनपद नहीं है। फिर भी आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रयोग से कृषि क्षेत्र में विकास हो रहा है। आधुनिक कृषि तकनीकों के प्रयोग से कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों को भी स्पष्ट किया जायेगा। अध्ययन का उद्देश्य जनपद में भू उपभोग प्रतिरूप व कृषि उत्पादकता पर इसका प्रभाव का गहनता से अध्ययन करना है। जनपद में कृषि के स्तर को कैसे सुधारा जा सकता है, कृषि योग्य बेकार पड़ी भूमि को कैसे कृषि क्षेत्र में लाया जा सकता है। उन्नत बीजों व खादों का प्रयोग करके कैसे कृषि उत्पादन बढाया जा सकता है। कैसे निर्धन लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारी जा सकती है। बढती हुई जनसंख्या को भोजन प्रदान करने के साथ–साथ कैसे जनपद की अर्थव्यवस्था में कृषि की भागेदारी बढाई जा सकती है आदि प्रश्नों के समाधान तक पहुँचना ही अध्ययन का उद्देश्य है।

उपकल्पना

अनुसंधान से पूर्व का चिन्तन उपकल्पना के नाम से जाना जाता है। उपकल्पना की सहायता से जीवन के अपरिचित क्षेत्र में प्रवेश किया जाता है और उपकल्पना की सहायता से ही अनुसंधान कार्यक्रम की रूपरेखा का निर्माण किया जाता है।

पूर्व में समस्याओं से सम्बन्धित जो जानकारी होती है उसके आधार पर अनुसंधान प्रारम्भ करते हैं। जनपद बदायूँ के विशेष सन्दर्भ में भू उपयोग प्रतिरूप एवं उत्पादकता पर उसका प्रभाव मूलतः विश्लेषणात्मक होगा। साथ ही समस्याओं के समाधान पक्ष पर भी प्रकाश डाला जायेगा। कृषिगत क्षेत्रफल बढाने, बेकार पड़ी भूमि को कृषि के अर्न्तगत लाने, निर्धन जनसंख्या के जीवन स्तर को सुधारने के उपायों पर प्रकाश डाला जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dr. Pandey J.N. and Dr. Kamlesh S.R. (1999) Agriculture Geography Basundhra Prakashan Gorakhpur.
2. Singh, J, and Dhillon, SS (1982) Agricultural of GEography.
3. Bansal PC (1987) Agricultural of problems of India, New Delhi.
4. Dr. Pandey J.N. and Dr. Kamlesh S.R. (1999) Agriculture Geography Basundhra Prakashan Gorakhpur.
5. Singh, J, and Dhillon, SS (1982) Agricultural of GEography.
6. Bansal PC (1987) Agricultural of problems of India, New Delhi.
7. Dr. Shrivastva SS (1970) Draft for five year planning commission Hariyana.
8. Dr. Dehre T.R. (1998) Regional Planning and Development, Basundhra Prakashan Gorakhpur.
9. Husain M (2002) Systematic Agricultural Geography.

पत्र–पत्रिकायें

1. आर्थिक गणना 2011
2. योजना हिन्दी पत्रिका 2011
3. सांख्यिकी पत्रिका जनपद बदायूँ 2011
4. सामाजिक समीक्षा जनपद बदायूँ 2011